फरीदाबाद
मजदूर समाचार

मजदूरों के अनुभवों व विचारों के आदान-प्रदान के जरियों में एक जरिया

नई सीरीज नम्बर 144 जून 2000

उँगलियों पे तिनके-चिन्दे-धागे-कंकड़ पर्याप्त हैं ऊँच-नीच के कफन और कब्र के लिये

ऊँच-नीच के संस्कार और संस्कृति की जन्म से मृत्यु तक की घुट्टियाँ :

– उँगली पर गोवर्धन, मुँह में सूरज, ईश्वर-अल्लाह-गॉड के चमत्कार

– महाबली, महाज्ञानी, महावीर, महात्यागी पुरूषों के (इक्की-दुक्की स्त्रियों के भी) गुणगान

– महाप्रलय, महापलायन, महायुद्ध, महापापियों के किस्से

– अव्वल होने, औरों को पछाड़ने, सिर-माथों पर चढने की हवस

नेता-नेत्री, अभिनेता-अभिनेत्री, लेखक-गीतकार-संगीतकार-नचैया-भाँड, खिलाड़ी, ज्ञानी-विद्वान-विशेषज्ञ इन घुट्टियों में चटक रँग और मिठास की लेप के लिये करतब दर करतब करते हैं। ऊँच-नीच के संस्कार और संस्कृति की घुट्टियाँ पिलाने के लियें टी.वी. एक बहुत व्यापक पहुँच वाला इनका औजार है।

और नकचढे हैं बुद्धू

ऊँच-नीच के संस्कार और संस्कृति का आधार है : सामान्य जनों, आम लोगों, जनता, मजदूरों को बुद्धू ही नहीं बल्कि महाबुद्धू मान कर चलना। लेकिन जनता-जनार्दन है कि ऊँच-नीच के प्रति आकर्षित करने, सम्मोहित करने के लिये संस्कार-संस्कृति को ऐसे प्रयासों को मजबूर कर रही है जिनसे ये अधिकाधिक बेपर्दा हो रहे हैं। छवि-इमेज के लिये अधिकाधिक सतर्कता, जवान शरीरों से कपड़े उतारने की बढती होड़ पगला रही है अव्वलों को, श्रेष्ठों को। लेकिन इनके विस्तार में नहीं जा कर, यहाँ हम उत्पादन के एक अखाड़े की सीधी-सपाट बयानी तक अपने को सीमित रखेंगे।

लीडरी का विलाप

– गेट मीटिंग में अब माइक लगाने पड़ते हैं। खुद ही जोर-जोर से नारे लगाते हैं पर मजदूर ध्यान ही नहीं देते।

– कुर्बानी वाले कैसेटों का भी मजदूर मखौल उड़ाने लगे हैं।

– दो ग्रुप बना कर भी नहीं बाँध पा रहे। मजदूर दोनों ग्रुपों से चौकस रहते हैं और समय आता है तब किनारा कर लेते हैं।

– नेताओं पर "चोट" होती है तब भी अब मजदूर भड़कते ही नहीं।

– फैक्ट्री गेट पर तो जैसे-तैसे रोक लेते हैं पर और कहीं बुलाओ तो मजदूर आते ही नहीं। जलूस और विशाल आम सभा के लिये मजदूर एकत्र ही नहीं होते तो नेता करें ही क्या ?

– सौ-सौ माँगों वाली एग्रीमेन्ट की बातों में भी मजदूर रुचि नहीं लेते। हड़ताल की कहो तो मजदूर कहते हैं कि और मरवायेंगे।

–डिपार्टमेन्ट स्तर पर भी 15-20 वरकर इकट्ठे हो कर जाने से बचने लगे हैं। आगे हो कर बोलने वाली पहचान कैसे बनेगी ? नेतागिरी के स्रोत ही सूखने लगे हैं....

कन्ट्रोल करना मुश्किल

कहते हैं कि नौकरी के प्रति, कम्पनी के प्रति, यूनियन के प्रति, सरकार के प्रति, न्याय के प्रति मजदूरों की आस्थायें टूट रही हैं। वास्तव में हमारे भ्रम दूर हो रहे हैं – भक्षकों को रक्षक मानना आई-गई बात हो रही है। ऐसे में इनका घटना-ईवन्ट-स्पैक्टेकल बनाने वाला रामबाण फुस्स होने लगा है। ये जब घटना की रचना करने लगते हैं तभी हमें आशंकायें होने लगती हैं कि कोई न कोई लफड़ा है।

अप्रत्यक्ष नियन्त्रण ज्यादा घातक होता है। अप्रत्यक्ष नियन्त्रण का पँचर होते जाना इन्हें डायरेक्ट कन्ट्रोल, दादागिरी-गुण्डागर्दी को अधिकाधिक अपनाने को मजबूर कर रहा है। ऐसे में मजदूरों को मुट्ठी में रखने की ख्वाहिशों वाले चिन्तित हैं। हमारा काम इनकी चिन्ताओं को बढाना है।

खोखली बुनियाद , जर्जर स्तम्भ

कौन पिट गये हैं ? वेदों के मन्त्रों के समवेत स्वर की तर्ज पर रंग-बिरंगे नेता और उनके लगुये-भगुये कहते हैं : मजदूर पिट गये हैं ! इहलोक-परलोक के ठेके लेने वाले प्रतिनिधियों-नुमाइन्दों-नेताओं के नाकारा होने को इनके द्वारा " मजदूर पिट गये हैं" कहना स्वाभाविक है। इनके अस्तित्व का आधार ही आम लोगों, मजदूरों की गतिविधियों को महत्वहीन-गौण दिखाने में है।

हकीकत में मजदूरों के खुद के कदम बढ रहे हैं। बिना शोर-शराबे के, शान्त मन से चुपचाप उठाये जाते हमारे स्वयं के कदम व्यापक और कारगर हो रहे हैं। चाट डाली है हम ने ऊँच-नीच की बुनियाद। बड़े, धमाकेदार और तुरन्त प्रभाव दिखाई दे वाले दलदल से बचते हुये हमें ऐसे तालमेलों को बढाने की आवश्यकता है जो प्रत्येक की खुद की गतिविधियों को प्रोत्साहित करें।■

जाल में छेद

विनायक फैब्रिक्स मजदूर : "हम 200 थे। मैनेजमेन्ट ने 80 को निकालने की बात की तो सितम्बर 99 में हम ने एक यूनियन का पल्लू पकड़ा। झण्डा लगते ही मैनेजमेन्ट ने एक-एक, दो-दो करके वरकर निकालने शुरू कर दिया और अब तक 40 को निकाल चुकी है। साथ ही मैनेजमेन्ट ने 80 लोग नये भर्ती कर लिये। 17 फरवरी की रात मैनेजमेन्ट ने नये और पुरानों में झगड़ा करवाया। कईयों को चोटें आई। मैनेजमेन्ट ने 7 पुरानों पर पुलिस केस बनवा दिये। यूनियन लीडर कह रहे हैं कि हड़ताल करो। हम पहले ही काफी नुकसान उठा चुके हैं तथा हमें पता है कि हड़ताल से और नुकसान होगा। इसलिये लीडरों के कहने को जैसे-तैसे करके टाल रहे हैं।"

इन्जेक्टो मजदूर : " हम परमानेन्टों से कैजुअल अच्छे हैं। कम से कम इतना तो है कि वे किसी-किसी काम को नाट जाते हैं और ज्यादा जोर देने पर स्टाफ को धमका देते हैं। कैजुअल कहते हैं कि तुम्हारी तरह स्थाई नहीं हैं, हमें तो कहीं न कहीं और जाना ही है, तुम्हें पीट कर किनारे हो जायेंगे। जबकि हम परमानेन्ट की मोहर वालों को नौकरी छूट जाने का डर लगता है इसलिये कुछ कहने से भी बचते हैं। और, बीस साल सर्विस वालों को भी महीने के ढाई हजार ही मिलते हैं।"

कैजुअल वरकर : " कुछ सुपरवाइजर-मैनेजर कम्पनियों की ज्यादा ही वफादारी दिखाते हैं। ज्यादा परेशान कर रहे एक मैनेजर की **एस्कोर्ट्स फार्मट्रैक** में हम ने धुनाई की है और दो मैनेजरों को थप्पड़ इनाम में दिये हैं।"

झालानी टूल्स मजदूर : "काट-पीट कर जो बनाई है उसकी भी आधी-परदी तनखा जनवरी माह की सब को अभी तक नहीं दी है। एक गिरोह कहता है कि हम यह केस जीत गये हैं तो दूसरा गिरोह कहता है कि हम वह केस जीत गये हैं। हम अच्छी तरह समझ रहे हैं कि दोनों लीडरी गिरोह मैनेजमेन्ट के साथ मिल कर हमारी 25

(बाकी पेज तीन पर)

मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी, एन. आई. टी. फरीदाबाद—121001 (यह जगह बाटा चौक और मुजेसर के बीच गंदे नाले की बगल में है।)

बेनकाब बाटा

मैं, रामविलास, 1.3.1973 को यहाँ बाटा फैक्ट्री में फिटर मैकेनिक भर्ती हुआ था। मुझे और 7-8 अन्य मैकेनिकों को वेतन में कम्पनी सिर्फ बेसिक देती थी जबकि अन्य वरकरों की तनखा में बेसिक के साथ डी.ए. भी होता था। दबाव दे कर इंजिनियर लोग हम मैकेनिकों से हर महीने 150-200 घन्टे ओवर टाइम काम करवाते थे लेकिन पेमेन्ट सिंगल रेट से करते थे जबकि अन्य वरकरों को ओवर टाइम की पेमेन्ट डबल रेट से थी।

हम डी.ए. तथा ओवर टाइम डबल रेट से माँगते रहते थे और कम्पनी आगे से दे देंगे कह कर टालती रहती थी। इस सिलसिले में जुलाई 1983 में एकाएक बाटा मैनेजमेन्ट बोली कि तुम ठेकेदारों के रूप में काम करते हो और लिख कर दो कि डी.ए. तथा डबल रेट से ओवर टाइम नहीं चाहिये। हम तीन ने लिख कर देने से इनकार कर दिया तो कम्पनी ने जुलाई 83 की हमारी तनखा रोक ली। मेरे दो साथी धौज गाँव के थे, वे नौकरी छोड़ गये। मैं फैक्ट्री में काम करता रहा। अपनी तनखा के लिये मैंने 29.8.83 को श्रम विभाग में केस किया। सूचना मिलने पर बाटा मैनेजमेन्ट ने 10.9.83. को मेरा फैक्ट्री प्रवेश रोक दिया।

श्रम अधिकारी लगातार टालमटोल कर समय बर्बाद करने लगा। कोई सुनवाई नहीं होती देख मैंने अपना केस पेमेन्ट ऑफ वेजेज अधिकारी के यहाँ से वापस ले लिया और 1973 से 1983 के डी.ए. के लिये लेबर कोर्ट में धारा 33 सी (2) के तहत डाला। बाटा फैक्ट्री का रेगुलर वरकर होने के सबूत में मैंने 54 दस्तावेज पेश किये। जज ने 18.3.88 को मेरे हक में 30,369 रुपये का फैसला सुनाया। कम्पनी ने मुझे पैसे दे दिये लेकिन ड्युटी पर नहीं लिया।

नौकरी की बहाली के लिये मुझे डिमान्ड नोटिस देना पड़ा। बाटा मैनेजमेन्ट ने अड़ँगे पर अड़ँगे डाले और मामले को दो साल तो चण्डीगढ ही रुकवा दिया। लेबर कोर्ट में केस रेफर होने के बाद भी बाटा मैनेजमेन्ट ने समय बर्बाद कर मुझे परेशान करने में कोई कमी नहीं छोड़ी। अपनी गवाही टालने में तो कम्पनी ने हद कर दी। 13-14 साल लग जाने पर ट्रिब्युनल के जज ने मेरे पक्ष में फैसला दिया। 1983 से पूरा वेतन अदा करने के साथ मुझे नौकरी पर बहाल करने का फैसला 20.8.99 को दिया। यह अवार्ड सरकारी गजट में छप भी गया है।

बाटा कम्पनी ने चण्डीगढ हाई कोर्ट में मेरे खिलाफ अपील कर दी है पर उसे स्टे नहीं मिली है। हाई कोर्ट में अपील की आड़ में मैनेजमेन्ट ने श्रम अधिकारी के यहाँ फिर काफी समय बर्बाद किया है। आखिरकार श्रम अधिकारी को मैनेजमेन्ट द्वारा अदालत के फैसले का पालन नहीं करने पर बाटा कम्पनी के चालान की सिफारिश करनी पड़ी है। लेकिन 17 साल बाद भी मुझे कम्पनी से कोई राहत नहीं मिली है। यह है बाटा कम्पनी के अत्याचार की कहानी, एक बाटा मजदूर की जुबानी।

21.5.2000 रामविलास, बाटा फैक्ट्री मजदूर

कम्पनियाँ किसी की नहीं होतीं

एस्कोर्ट्स वरकर : "अन्य कम्पनियों की ही तरह एस्कोर्ट्स ग्रुप में भी कर्मचारियों के वेतन में वार्षिक वृद्धि होती आई है। इस वर्ष से सुपरवाइजरों और मिडल मैनेजरों को मिलने वाली 125-225 रुपये वार्षिक वृद्धि अचानक खत्म कर दी गई है। एस्कोर्ट्स ग्रुप के 3000 के करीब सुपरवाइजरों-मैनेजरों को 70-80 लाख रुपये की तत्काल चपत कम्पनी ने लगा दी है। इससे नुकसान ग्रेच्युटी, प्रोविडेन्ट फण्ड, हाउस रैन्ट आदि में भी होगा। एक साल की वेतन वृद्धि नहीं देने से ही सुपरवाइजरों-मैनेजरों को दसियों करोड़ का नुकसान होगा जबकि कम्पनी ने तो आगे के हर वर्ष की वार्षिक वेतन वृद्धि खत्म कर दी है।"

और बातें यह भी

हितकारी पोट्रीज मजदूर : "गरीब, दुखी मजदूरों की हाय से इन मैनेजमेन्टों का बेड़ा गर्क नहीं हो रहा। ऊपर भगवान के दरबार में भी लगता है कि यहाँ के लीडरों की तरह ही बिचौलियों का दबदबा है।"

न्यू एलनबेरी वरकर : "गुण्डागर्दी के जरिये मैनेजमेन्ट मनमानी कर रही है। प्रतिदिन हम जो उत्पादन करते हैं उसे दो महीनों से जानबूझ कर कम लिख रही है। फिर कम उत्पादन कह कर इनसैन्टिव के हमारे 175 रुपये खा जाती है, तनखा में से भी पैसे काट रही है।"

नगर निगम वरकर : "हुड्डा से कम्पलेक्स में जिन कर्मचारियों को ट्रान्सफर किया उनके फण्ड का पता ही नहीं क्या हो रहा है। ड्युटी 12-14-16 घण्टे लेते हैं। जॉब निर्धारित कुछ होती है तथा काम कुछ और करवाते हैं। पहले जो साबुन-तेल मिलता था वह भी बन्द कर दिया। पानी में डालने को ब्लीचिंग पाउडर देते हैं पर पानी का प्रेशर होता ही नहीं और गलती हमारी ठहराते हैं। रौब-दाब तो झाड़ते ही हैं, चमचागिरी करवाने के लिये अफसर परेशान भी बहुत करते हैं।"

एस्कोर्ट्स मजदूर : "फैक्ट्री में तो खटना पड़ता ही है, ड्युटी से लौटो तो पानी के लिये मारे-मारे फिरो। खूब प्रगति हो रही है : नहाने की चिन्ता तो छोड़ ही दी, अब हमें रोज पीने के पानी के लिये कट्टी-कैन लटकाये जगह-जगह डोलना पड़ता है।"

बेनसन इंजिनियर्स वरकर : "पहले ई.एस. आई. काटते थे लेकिन फिर बन्द कर दी। अब कम्पनी फिर इसे काटने की कह रही है और इसके लिये हमें अपने नाम बदलने को कह रही है।"

मितासो एपलाइन्सेज मजूदर : "मैनेजमेन्ट ने मुझ धर्मपाल को एक निलम्बन व आरोप पत्र दिया। आरोपों का मैं जब भी जवाब देने की कोशिश करता मैनेजमेन्ट यही कहती कि हम ने उत्तर माँगा ही नहीं है। इस तरह डेढ महीना निकाल दिया। तब मैंने रजिस्टर्ड डाक से मैनेजमेन्ट को अपना उत्तर भेजा। लेकिन रजिस्ट्री मेरे पास डाक विभाग की इस टिप्पणी के साथ लौट आई है कि लेने से इनकार कर दिया!"

कम्पनियों की क्लासें

एस्कोर्ट्स मजदूर : "दोनों शिफ्टों को एक ही शिफ्ट में बुलाते हैं क्योंकि इस समय ट्रैक्टरों का कम उत्पादन चाहिये। मैनेजमेन्ट ने सब कैजुअल वरकर निकाल दिये हैं और बाहर से विशेषज्ञ बुला कर क्लासें लगा रही है। एक शिफ्ट वाले उत्पादन में जोते होते हैं उस समय दूसरी शिफ्ट वालों को भिन्न-भिन्न क्लासों में बोर करते हैं। एक विद्वान हमें आग से जलाता है तो दूसरा बिजली के झटके लगाता है। एक ज्ञानी हमें क्वालिटी-गुणवत्ता के चाबुक मारता है तो दूसरा कार्यस्थल पर व्यवहार का जाल फैलाता है। सब विद्वान कहते हैं कि जितने चाहो सवाल करो लेकिन असुविधाजनक सवाल पूछने पर कहते हैं : 'बैठ जाओ', 'अपना नाम बताओ'। प्रोडक्टीविटी-उत्पादकता-वर्कलोड बढाने की वकालत करने वाला विद्वान हमें कहता है: 'आप लोग जितना ज्यादा काम करोगे उतने ही आप ऊँचे होगे और मैनेजमेन्ट को भी लाभ होगा — मजदूर भी ज्यादा लें और मैनेजमेन्ट भी ज्यादा ले'। प्रोडक्टीविटी-वर्क लोड की घनचक्कर शिक्षा देने वाले अध्यापक से वरकर पूछते हैं : 'हिस्सा बढाने की बात बाद में करेंगे, पहले यह बताओ कि अभी ही मैनेजमेन्ट कितना लेती है? बोझा बढाने से मनुष्य झुकता है या ऊँचा होता है? जिनकी छँटनी होगी वे हवा में ऊँचे होंगे क्या?' तो अध्यापक बोलता है : 'सब बोलो ओउम!' इन क्लासों में बैठने को मजबूर करने के लिये दो बार हाजरी लगाते हैं, 11 बजे और ढाई बजे।"

मजदूर समाचार में साझेदारी के लिये

★ अपने अनुभव व विचार इसमें छपवा कर चर्चाओं को कुछ और बढवाइये। नाम नहीं बताये जाते और अपनी बातें छपवाने के कोई पैसे नहीं लगते।

★ बाँटने के लिये सड़क पर खड़ा होना जरूरी नहीं है। दोस्तों को पढवाने के लिये जितनी प्रतियाँ चाहियें उतनी मजदूर लाइब्रेरी से हर महीने 10 तारीख के बाद ले जाइये।

★ बाँटने वाले फ्री में यह करते हैं। सड़क पर मजदूर समाचार लेते समय इच्छा हो तो बेझिझक पैसे दे सकते हैं। रुपये-पैसे की दिक्कत है।

महीने में एक बार ही छाप पाते हैं और 5000 प्रतियाँ ही फ्री बाँट पाते हैं। मजदूर समाचार में आपको कोई बात गलत लगे तो हमें अवश्य बतायें।

कानून हैं शोषण के लिये और छूट है कानून से परे शोषण की

साधु फोरजिंग मजदूर : "25 सैक्टर प्लान्ट में एक- दो डिपार्टमेन्ट के मजदूरों को छोड़ कर बाकी सब ठेकेदारों के मजदूर हैं जिन्हें महीने की तनखा 1200- 1300 रुपये ही देते हैं। न ई.एस. आई. है और न प्रोविडेन्ट फण्ड।"

पावर टूल्स वरकर : "यह ए.पी. इंजिनियरिंग का प्लान्ट है। महीने का वेतन 1250 रुपये ही देते हैं। न ई.एस.आई. है और न प्रोविडेन्ट फण्ड।"

मोहता ब्राइट स्टील : "जो परमानेन्ट हैं उनको जनवरी में लगने वाली इनक्रीमेन्ट नहीं दी है और बाकी मजदूरों को तो तनखा ही 1200 रुपये महीना देते हैं। न ई.एस.आई है और न फण्ड।"

खण्डेलवाल वरकर : "प्लाट 68 सैक्टर 6 में फैक्ट्री बन्द दिखा रखी है लेकिन फैक्ट्री में 40 मजदूरों से काम करवा रहे हैं। तीन मजदूरों के पावर प्रेस पर हाथ कट गये — दो को तो बिना इलाज करवाये मार- पीट कर भगा दिया पर एक अड़ गया तो उसका ई.एस.आई. कार्ड बनवा दिया है। बाकि किसी मजदूर को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिया है। महीने का वेतन 1200- 1400 रुपये देते हैं। बिना प्रशिक्षण वाले नये- नये वरकरों को पावर प्रेस पर लगा देते हैं।"

एस. जी. एल. मजदूर : "पूरे 30 दिन काम करने पर 1642 रुपये तनखा बनाते हैं और उसमें से ई.एस.आई. व फण्ड के पैसे काट कर 1300- 1400 रुपये ही देते हैं। ई.एस.आई. कार्ड नहीं देते और न फण्ड की पर्ची। नौकरी से निकाल देते हैं तब प्रोविडेन्ट फण्ड के पैसे नहीं मिलते। सादे कागजों पर हाजरी लगाते हैं।"

जैन डाई कास्टिंग वरकर : "जनवरी- फरवरी की तनखा तो इकट्ठी दे दी लेकिन अप्रेल की आज 12 मई तक नहीं दी है। जैना कास्टिंग में तो फरवरी का वेतन भी 11 मई तक नहीं दिया था। मैनेजमेन्ट कहती है कि काम नहीं है और जैना कास्टिंग से जैन डाई कास्टिंग से ओसवाल प्रेशर डाई कास्टिंग में ट्रान्सफर करके 30- 35 मजदूरों को निकाल दिया है, डेढ साल से हमारा प्रोविडेन्ट फण्ड जमा नहीं करवाया है।"

क्युअरवेल मजदूर : "मार्च और अप्रेल की तनखायें आज 19 मई तक नहीं दी हैं।"

श्री इन्डस्ट्रीज वरकर : "20 साल से काम कर रहों को 1800- 1900 रुपये महीना ही देते हैं। नये वरकरों की न ई.एस.आई. है न फण्ड और वेतन सिर्फ 1400- 1500 है।"

ठेकेदार के मजदूर : "कई शिकायतें **गुडईयर** मैनेजमेन्ट से करने के बाद एक ठेकेदार ने जनवरी- फरवरी- मार्च महीनों की तनखायें 19 अप्रेल को वरकरों को दी लेकिन हम 70 मजदूरों का जो ठेकेदार है उसने जनवरी, फरवरी, मार्च और अप्रेल महीनों की तनखायें हमें आज 19 मई तक नहीं दी हैं। हम गुडईयर मैनेजमेन्ट को कई बार शिकायतें कर चुके हैं पर कम्पनी के अफसर ठेकेदार से घूस खाते हैं इसलिये कुछ करते नहीं।"

सोनिया टैक्सटाइल्स वरकर : "अप्रेल का वेतन 18 मई को जा कर दिया। ओवर टाइम काम के पैसे डबल की बजाय सिंगल रेट से देते हैं और वे भी देरी से।"

रेबेस्टोस मजदूर : "5- 6 महीनों से तनखा में देरी कर रहे हैं। अप्रेल का वेतन 14 मई को जा कर दिया। फरवरी में किये ओवर टाइम काम के पैसे आज 19 मई तक नहीं दिये हैं।"

वर्कशॉप वरकर : "मैं 100 जगह काम कर चुका हूँगा। ज्यादातर जगह तनखा 7 से पहले देने की बजाय 25 तारीख को जा कर देते हैं। हिसाब में हेर- फेर खूब करते हैं और मजदूर को पैसे कम देते हैं।"

अतुल ग्लास मजदूर : "आज 13 मई तक हमें अप्रेल की तनखा नहीं दी है — स्टाफ को तो मैनेजमेन्ट ने अभी मार्च का वेतन भी नहीं दिया है।"

ठेकेदार के वरकर : "कार्ड पर फैक्ट्री का नाम नहीं लिखते। हम **बीयर फैक्ट्री** में काम करते हैं। अप्रेल का वेतन हमें आज 13 मई तक नहीं दिया है। हैल्परों को 1500 रुपये महीना ही देते हैं। न ई.एस.आई. है और न फण्ड।"

एनकॉन थर्मल इंजिनियर्स मजदूर : "वार्षिक वेतन वृद्धि नहीं देते। हैल्परों को 1500 रुपये ही वेतन देते हैं। ओवर टाइम के पैसे डबल की बजाय सिंगल रेट से देते हैं।"

ब्ल्यू प्रिसीजन वरकर : "कम्पनी ने तीन रजिस्टर रखे हैं। बोनस किसी को नहीं देते और न प्रोविडेन्ट फण्ड है। ज्यादातर को ई.एस.आई. कार्ड नहीं दिये हैं। महीने का वेतन हैल्परों को 1400- 1500 और ऑपरेटरों को 1800- 1900 रुपये ही देते हैं।"

ठेकेदार के मजदूर : "ठेकेदार लोग **एस्कोर्ट्स यामाहा** कम्पनी से 85 रुपये प्रति वरकर प्रतिदिन लेते हैं लेकिन हमें देते 60- 65 रुपये ही हैं। हमें रविवार की छुट्टी भी नहीं देते और जब चाहें निकाल देते हैं।"

बी.के. रबड़ वरकर : "मैं, शान्ति देवी, दस साल पहले इस फैक्ट्री में 500 रुपये महीना तनखा पर लगी थी। हर साल 50 रुपये बढाते थे और अब दो साल से 100- 100 रुपये बढाये। ई.एस.आई. कार्ड मेरे पास 6 साल से है। इस समय मुझे महीने के 1150 रुपये देते हैं पर अँगूठा 1800- 1900 पर लगवाते हैं। मैंने तनखा बढाने की कई बार कही तो शनिवार 20 मई को मुझे नौकरी से ही निकाल दिया।"

जाल में छेद.... (पेज एक का शेष)

महीनों की बकाया तनखा और हिसाब को डुबोने में जुटे हैं। हम ने यह भी अच्छी तरह देख लिया है कि राज्य सरकार- केन्द्र सरकार का कोई भी विभाग मजदूरों की मदद नहीं करता। सत्ता पक्ष- विपक्ष के नेता और पार्टियाँ आश्वासनों से मजदूरों को बेवकूफ बनाने की कोशिशें ही करते हैं। ऐसे में हम सोचते रहते हैं।"

हैदराबाद इन्डस्ट्रीज वरकर : "कुशल कारीगर का काम करवाते हैं और हैल्पर का ग्रेड देते हैं। लीडरों की मत पूछो — कोई काम पड़ता है तब मिलते ही नहीं, कहीं ए.सी. में बैठे रहते हैं। मिलने पर उन्हें कुछ कहो तो कहते हैं कि हम ने तुम्हें बोलना सिखा दिया है। हम में से ही लीडर बने हैं पर इतने अलग हो गये हैं कि सोचा भी नहीं जा सकता।"

टेकमसेह मजदूर : "टूल डाउन- तालाबन्दी द्वारा तीन महीने उत्पादन बन्द रख कर, लॉक आउट के दौरान हर तीसरे दिन छाप कर 'सन्देश' भेज कर, तरह- तरह की अफवाहें फैला कर, वी. आर.एस. के गुणगान करके, ... मैनेजमेन्ट की दाल नहीं गली। डर- भय- लालच- धोखाधड़ी का हर हथकण्डा इस्तेमाल करने के बावजूद मैनेजमेन्ट 103 मजदूरों को ही नौकरी छोड़ने को 'तैयार' कर पाई। जगह- जगह के अनुभवों की रोशनी में ज्यादातर मजदूर झाँसे में नहीं आये। ऐसे में मैनेजमेन्ट ने अफरा- तफरी में सरकार से 200 मजदूरों की छँटनी का प्रबन्ध कर 16 मई से एक प्लान्ट में तालाबन्दी खत्म कर दी और एक में जारी रखी है। जल्दबाजी में तथा अन्य कारणों से सरकार द्वारा दी गई 200 वरकरों की छँटनी की इजाजत के खिलाफ मजदूर अपील करेंगे। टेकमसेह मैनेजमेन्ट की स्कीम 650 मजदूरों को नौकरी से निकालने की है और इस आँकड़े तक पहुँचने के लिये ही एक प्लान्ट में तालाबन्दी जारी रखी गई है तथा तरह- तरह की अफवाहें फ़ैलाई जा रही हैं। मैनेजमेन्ट लाख कहे कि महिला मजदूरों को ड्युटी पर नहीं लेगी पर झख मार कर उसे महिला मजदूरों को भी नौकरी पर रखना होगा। एस्कोर्ट्स और बाटा के बाद अब टेकमसेह में हम मैनेजमेन्ट के दाँत खट्टे कर रहे हैं।"

होटल मजदूर : "पारिवारिक और सामाजिक जिम्मेदारियों का भार तब से उठा रहा हूँ जब मैं अपना ही भार उठाने के काबिल नहीं था। इस होटल पर काम करते मुझे 15 साल हो गये हैं — 500 रुपये पर लगा था और अब 1700 देते हैं। कहने को खाना- कपड़ा है पर मेरा दिल ही जानता है। मेरे दो बच्चे हैं, बीवी है, माँ- बाप हैं। जिम्मेदारी निभाने के लिये खटता हूँ वरना इस काम से मैं ऊब गया हूँ। बहुत जिल्लत झेलनी पड़ती है और इसके चलते मैं शराब भी पीने लगा हूँ। मैं पुराना हूँ इसलिये होटल वाला मुझे उस्ताद कह कर बेवकूफ बनाने की कोशिश करता है। मैं सुपरवाइजरी- ऊपरवाइजरी नहीं करता और हम सब वरकर मिल कर तेल- चीनी तो आये दिन ठिकाने लगाते ही हैं। मैं समझता हूँ कि मेरी- हमारी मुक्ति इन होटलों के बन्द होने में है।"

क-ख-ग 2

150 साल पहले फैक्ट्री इस या उस व्यक्ति की होती थी। हर फैक्ट्री का कोई न कोई मालिक अथवा मालकिन थी। फैक्ट्री की बढती लागत ने हिस्सा-पत्ती को जरूरी बनाया। इकन्नी-दुअन्नी हिस्से वाले शेयर-स्टॉक होल्डर मिल कर फैक्ट्री के लिये आवश्यक पैसे लगाने वाले बने। लेकिन 1900 आते-आते उत्पादन में प्रमुख भूमिका निभाने वाली फैक्ट्रियों की लागत ने वह आकार ग्रहण किया कि पैसों के प्रबन्ध के लिये हजारों शेयर होल्डर होना आवश्यक बना। फैक्ट्री का मालिक-मालकिन कौन? किसी मानव मूर्ति की तरफ इशारा करना सम्भव नहीं रहा। आज से सौ साल पहले हर महत्वपूर्ण फैक्ट्री किसी-न-किसी कम्पनी की होने लगी।

लागत बढने का सिलसिला जारी रहा और हजारों शेयर होल्डर भी पैसों का प्रबन्ध करने में अयोग्य-अक्षम होने लगे। पैसों के जुगाड़ का बड़ा स्रोत कर्ज बनने लगा। आज स्थिति यह है कि उल्लेखनीय उत्पादन इकाईयों की लागत का 10-15 प्रतिशत शेयर होल्डरों द्वारा और 85-90 प्रतिशत बैंकों / वित्तीय सँस्थाओं से कर्ज द्वारा किया जाता है। फैक्ट्रियों की जमीन-बिल्डिंग-मशीनें गिरवी रखी होती हैं।

आज किसी भी महत्वपूर्ण फैक्ट्री का कोई व्यक्ति मालिक-मालकिन नहीं है। कर्ज से दबी उल्लेखनीय उत्पादन इकाईयाँ कम्पनियों की हैं। बोर्ड ऑफ डायरेक्टर्स के तहत चेयरमैन-मैनेजिंग डायरेक्टर-चीफ एग्जेक्युटिव-प्रेसीडेन्ट-वाइस प्रेसीडेन्ट-जनरल मैनेजर-मैनेजर-सुपरवाइजर वाली मैनेजमेन्टें कम्पनियों का संचालन करती हैं, यानि, मजदूरों को निचोड़ती हैं।

डाक पता : मजदूर लाईब्रेरी,
आटोपिन झुग्गी,
एन.आई.टी.फरीदाबाद—121001

यह होती है सरकार

दिनांक 22.3.2000 के पत्र द्वारा टेकमसेह मैनेजमेन्ट ने हरियाणा सरकार से दो डिपार्टमेन्टें बन्द करने तथा उनमें कार्यरत 200 मजदूरों की छँटनी की इजाजत माँगी। फैसले के लिये सरकार ने दो महीने भी नहीं लिये और 19.5.2000 को आदेश दिया कि टेकमसेह कम्पनी के हित में 200 मजदूरों को नौकरी से निकाल दिया जाये।

हाँ, यह होती है सरकार

फरीदाबाद गैस गैजेट मजदूर : "प्लाट 137 सैक्टर—24 की इस फैक्ट्री में हम 300 वरकर काम करते थे। फैक्ट्री को बन्द किये 10 साल से ऊपर हो गये हैं। लिक्विडेटर के पास मामला है, इतने साल बाद भी हमारे पैसे हमें नहीं मिले हैं।"

नगर निगम वरकर : "1996 में सफाई कर्मचारियों की हड़ताल के समय सरकार ने रेडियो-टीवी-अखबारों में जोर-शोर से प्रचार किया कि परमानेन्ट नौकरी के लिये आयें। बेरोजगारी की मार से त्रस्त लोग दूर-दूर से आये। फरीदाबाद में ही सरकार ने 600-700 सफाई कर्मचारी भर्ती किये — कमिश्नर ने रेगुलर के लैटर दिये, बी.के. में मेडिकल हुआ, सर्विस बुक बनी, पाँचों उँगलियों के निशान लिये। हड़तालियों से हम ने गालियाँ खाई और कुटे-पिटे पर नौकरी के लिये सब सहन किया।

"85 दिन बाद हड़ताल फेल हुई। हड़ताल की एक प्रमुख माँग 240 दिन लगातार काम कर चुके वरकरों को परमानेन्ट करने की थी जबकि दस साल से लगातार काम कर रहे सफाई कर्मचारियों को भी सरकार ने कैजुअल ही रखा था। फरीदाबाद में 240 दिन से ज्यादा लगातार काम कर रहों की यह सँख्या 1800-1900 थी।

"हम नासमझ थे कि सरकार के चक्कर में आ गये और अपने भाई-बहनों को कुचलने में सरकार की मदद की। जलील तो हम हुये ही, हमें ठोकरें भी खूब लगी हैं। पाँच साल हो गये हैं लेकिन हम 600-700 को सरकार ने आज तक वेतन नहीं दिया है। शुरू से ही हमें वेतन एडवान्स दे रहे हैं — पहले 1500 रुपये महीना दिये और अब 2-3 महीनों से 1901 देने लगे हैं। आर — 12 रजिस्टर में वेतन एडवान्स देते हैं। हमारी बकाया तनखा ही एक-एक लाख रुपये हो गई है।

"एक साल हमें कैजुअल छुट्टियाँ दी लेकिन फिर बन्द कर दी। अब कोई भी छुट्टी का प्रावधान नहीं है — न ई.एल. है, न मेडिकल छुट्टी। बीमार होते हैं तब गैरहाजरी ही लगती है। महिला वरकरों को तो और भी परेशानी है — जच्चा को डिलीवरी में भी छुट्टी नहीं। न हम जिन्दा हैं, न मरे हैं।

"जिनको निकाल देते हैं अथवा परेशान हो कर जो नौकरी छोड़ जाते हैं उनको बकाया वेतन का एरियर भी नहीं देते।

"जो हड़ताल पर थे और जो हड़ताल में भर्ती हुये के बीच अब कोई झगड़े नहीं हैं। हम दोनों समझ गये हैं कि सरकार ने अपना काम निकाला है, निकाल रही है और सस्ते में काम करवा रही है।"

ठेकेदारी प्रथा

शुरू हुई ठेकेदारी हम फिर से हो गये दास
पक्के होने की कम्पनी में खत्म हो गई आस
खत्म हो गई आस समझ में कुछ भी नहीं आता
सुबह-सुबह सुपरवाइजर काम और बढाने की कह जाता
प्रोडक्शन पूरी करने में लगानी पड़ती एड़ी-चोटी
शाम को दर्द करने लगती हमारी बोटी-बोटी
इतनी मेहनत पर भी रोटी सूखी ही मिल पाती
इस रोटी को कैसे चुपड़ें हमारी समझ में नहीं आती
सब्जी तो हम बिना छोंक लगाये ही खाते
फल की रेहड़ी वालों को हम दूर भगा कर आते
रेहड़ी देख कहीं बच्चों का मन फलों को ना कर जाये
फल ना दिला पाऊँ इससे कोई बच्चा हम से ना पिट जाये
थोड़ी तनखा देख मन यही सोच कर रोये
महीने के अन्त में बच्चे कहीं भूखे ही ना सोयें
पास खड़ी बीमारी हम को सदा डराती
बीमारी में भी हम को छुट्टी नहीं मिल पाती
इस पर भी हम को साहब की सुननी पड़ती
चार-चार की मेहनत अकेले ही हम को करनी पड़ती
नई सरकार से हम बैठे आस लगाये
इस ठेकेदारी को शायद ये ही दूर भगाये
पर ये लीडर भी कुछ नहीं कर पाते
इनके मुँह पहले ही नोटों से भर दिये जाते
टूट गई आस बस यही समझ में आता
अब की बार भी हम बरसात में खरीद नहीं पायेंगे छाता
कह कविता पानी सिर से भी 15 फुट हो गया ऊँचा ....

— विजय, कभी इस-कभी उस ठेकेदार का मजदूर

पैकिंग के अन्दर

एस्कोर्ट्स वरकर : "प्लान्टों को चमकाने में मैनेजमेन्ट करोड़ों खर्च कर रही है पर कैन्टीन में हमें वही आलू-बैंगन के साथ संघर्ष करना पड़ता है। जिस दिन आलू-मटर होता है उस दिन पानी पीने की जरूरत नहीं होती — मटर ढूँढने के लिये पानी में डुबकी लगानी पड़ती है। रोटी ऐसी देते हैं कि हजम करने के लिये ग्राइन्डर मशीन चाहिये। कुछ अफसर खा जाते हैं तथा कुछ ठेकेदार और बाकी बचा मजदूरों को मिलता है। घड़ी की सूईयों को ठहरा कर 4x4 फुट की तस्वीर से स्वर्गीय चेयरमैन मुस्कुराते हुये देखते रहते हैं।"

अप्रेन्टिस : "बहुत ही खतरनाक पदार्थ एस्बेसटोस का **हैदराबाद इन्डस्ट्रीज** में प्रयोग होता है। प्रशिक्षण के लिये अप्रेन्टिस फैक्ट्रियों में भेजे जाते हैं लेकिन हैदराबाद इन्डस्ट्रीज मैनेजमेन्ट ने हम अप्रेन्टिसों को सीधे प्रोडक्शन में लगा दिया है। कार्य का प्रशिक्षण देना तो दूर रहा, मैनेजमेन्ट हमें एस्बेस्टोस से बचाव के उपाय तक नहीं सिखा रही। सुनते हैं कि एस्बेस्टोस से होती घातक बीमारियों का बरसों बाद जा कर पता चलता है।"

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० आफसैट दिल्ली से मुद्रित किया।
RN 42233 पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी—546 नेहरु ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।